

भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राप्तिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY



सं. 143] नई दिल्ली, शनिवार, प्रौद्योगिकीय भवन, 30, 1977/वैशाख 10, 1899

No. 143] NEW DELHI, SATURDAY, APRIL 30, 1977/VAISAKHA 10, 1899

इस भाग में भिन्न पट्ट संलग्न की जाती है जिससे इक पट्ट अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed
as a separate compilation

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 30th April 1977

G.S.R. 209(E).—The following Proclamation by the President is published for general information

Whereas, I, Basappa Danappa Jatti, Vice-President acting as President of India, am satisfied that a situation has arisen in which the Government of Punjab cannot be carried on in accordance with the provisions of the Constitution of India (hereinafter referred to as "the Constitution").

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by article 356 of the Constitution and of all other powers enabling me in that behalf, I hereby proclaim that I—

- (a) assume to myself as President of India all functions of the Government of the said State and all powers vested in or exercisable by the Governor of that State;

- (b) declare that the powers of the Legislature of the said State shall be exercisable by or under the authority of Parliament, and
- (c) make the following incidental and consequential provisions which appear to me to be necessary or desirable for giving effect to the objects of this Proclamation, namely—
- (i) in the exercise of the functions and powers assumed to myself by virtue of clause (a) of this Proclamation as aforesaid, it shall be lawful for me as President of India to act to such extent as I think fit through the Governor of the said State,
- (ii) the operation of the following provisions of the Constitution in relation to that State is hereby suspended, namely—
- so much of the proviso to article 3 as relates to the reference by the President to the Legislature of the State;
- so much of clause (2) of article 151 as relates to the laying before the Legislature of the State of the report submitted to the Governor by the Comptroller and Auditor-General of India;
- articles 163 and 164;
- so much of clause (3) of article 166 as relates to the allocation among the Ministers of the business of the Government of the State; article 167 and so much of clause (1) of article 169 as relates to the passing of a resolution by the Legislative Assembly of a State; clause (1) and sub-clause (a) of clause (2) of article 174, articles 175 to 178 (both inclusive), clauses (b) and (c) of article 179 and the first proviso to that article and articles 180 and 181,
- so much of article 186 as relates to the salaries and allowances of the Deputy Speaker of the Legislative Assembly, articles 188, 189, 193, 194, 195 and 196, article 198, clauses (3) and (4) of article 199, articles 200 and 201;
- so much of clause (3) of article 202 as relates to the salaries and allowances of the Deputy Speaker of the Legislative Assembly, articles 208 to 211 (both inclusive), the proviso to clause (1) and the proviso to clause (3) of article 213, and
- so much of clause (2) of article 323 as relates to the laying of the report with a memorandum before the Legislature of the State;
- (iii) the Legislative Assembly of the said State is hereby dissolved,
- (iv) any reference in the Constitution to the Governor shall in relation to the said State be construed as a reference to the President, and any reference therein to the Legislature of the State or the Houses thereof shall, in so far as it relates to the functions and powers thereof, be construed, unless the context otherwise requires, as a reference to Parliament, and, in particular, the references in article 213 to the Governor and to the Legislature of the State or the House

thereof shall be construed as references to the President and to Parliament or the Houses thereof respectively:

Provided that nothing herein shall affect the provisions of article 153, articles 155 to 159 (both inclusive), article 299 and article 361 and paragraphs 1 to 4 (both inclusive) of the Second Schedule or prevent the President from acting under sub-clause (i) of this clause to such extent as he thinks fit through the Governor of the said State;

(v) any reference in the Constitution to Acts or laws of or made by the Legislature of the State shall be construed as including a reference to Acts or laws made, in exercise of the powers of the Legislature of the State, by Parliament by virtue of this Proclamation, or by the President or other authority referred to in sub-clause (a) of clause (1) of article 357 of the Constitution, and the Punjab General Clauses Act, 1898 (Punjab Act 1 of 1898), as in force in the State of Punjab, and so much of the General Clauses Act, 1897 (10 of 1897), as applies to State laws, shall have effect in relation to any such Act or law as if it were an Act of the Legislature of the State.

New Delhi,

The 30th April, 1977

B D JATTI,

Vice-President acting as President.

[No. V/11013/3/77-S&P(DV)]

New Delhi;

The 30th April, 1977

T. C. A SRINIVASAVARADAN, Secy.

ORDER

New Delhi, the 30th April 1977

G.S.R. 210(E).—The following Order by the President is published for general information:

In pursuance of sub-clause (i) of clause (c) of the Proclamation issued on this the 30th day of April, 1977, by me under article 358 of the Constitution of India, I hereby direct that all the functions of the Government of the State of Punjab and all the powers vested in or exercisable by the Governor of that State under the Constitution or under any law in force in that State, which have been assumed by the President by virtue of clause (a) of the said Proclamation, shall, subject to the superintendence, direction and control of the President, be exercisable also by the Governor of the said State

New Delhi;

The 30th April, 1977.

B. D. JATTI,

Vice-President acting as President.

[No. V/11013/3/77-S&P(DV)]

New Delhi;

The 30th April, 1977.

T. C. A. SRINIVASAVARADAN, Secy.

पृष्ठ मंत्रालय

अधिसूचना

तर्फ दिल्ली, 30 अग्रैल, 1977

सांकेति० 209 (म).—राष्ट्रपति द्वारा जारी की गई निम्नलिखित उद्घोषणा सर्व-
साधारण के सूचनार्थ प्रकाशित की जा रही है :

यतः मेरा, भारत के राष्ट्रपति के रूप में कार्य करते हुए उपराष्ट्रपति, बसपा दानपा
जत्ती का समाधान हो गया है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है, जिसमें कि प्राची राज्य का शासन
भारत के संविधान (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'संविधान' कहा गया है) के उपबन्धों के अनुसार नहीं
चलाया जा सकता है;

अतः अब मैं, संविधान के अनुच्छेद 356 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का तथा उस निमित्त मुझे
समर्थ बनाने वाली अन्य सभी शक्तियों का प्रयोग करते हुए एतद्वारा उद्घोषणा करता हूँ कि मैं :—

(क) उक्त राज्य की सरकार के सभी कृत्य और उस राज्य के राज्यपाल में निहित या
एतद्वारा प्रयोक्तव्य सभी शक्तिया, भारत के राष्ट्रपति के रूप में अपने हाथ
में लेता हूँ;

(ख) घोषित करता हूँ कि उक्त राज्य के विधान मंडल की शक्तिया ससद के प्राधिकार
द्वारा या अधीन प्रयोक्तव्य होंगी; और

(ग) निम्नलिखित आनुषंगिक और परिणामिक उपबन्ध करता हूँ जो इस उद्घोषणा के
उद्देश्यों को प्रधानी करने के लिए मुझे आवश्यक या बांछीय प्रतीत होते हैं, प्रथा॒त् :—

(i) इस उद्घोषणा के उपर्युक्त खड़ (क) के आधार पर अपने हाथ में लिए गए
कृत्यों और शक्तियों का प्रयोग करने में, मेरे लिए भारत के राष्ट्रपति के रूप
में उस सीमा तक जिस तक मैं ठीक समझूँ उक्त राज्य के राज्यपाल के माध्यम
से कार्य करना विधिपूर्ण होगा ;

(ii) उस राज्य के संबंध में संविधान के निम्नलिखित उपबन्धों के प्रवर्त्तन को एतद्-
वारा निलम्बित किया जाता है, प्रथा॒त् :—

अनुच्छेद 3 के परन्तुक का उतना भाग जितने का संबंध राष्ट्रपति द्वारा राज्य के
विधान मंडल को निदेश करने से है ;

अनुच्छेद 151 के खड़ (2) का उतना भाग जितने का संबंध भारत के नियन्त्रक
महालेखा परीक्षक द्वारा राज्यपाल को प्रस्तुत की गई रिपोर्ट के राज्य विधान
मंडल के समक्ष रखे जाने से है ;

अनुच्छेद 163 और 164;

अनुच्छेद 166 के खड़ (3) का उतना भाग जिनमें का सबूत राज्य सरकार के कार्यों का मन्त्रियों के शीघ्र आवृटन से है; अनुच्छेद 167 और अनुच्छेद 169 के खड़ (1) का उतना भाग जिनमें का सबूत राज्य की विधान सभा द्वारा संकल्प के पारित किए जाने से है;

अनुच्छेद 174 का खड़ (1) और खड़ (2) का उपर्युक्त (क); अनुच्छेद 175 से 178 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं); अनुच्छेद 179 का खेड़ (ख) और (ग) और उस अनुच्छेद का प्रयत्न परन्तुक और अनुच्छेद 180 और 181;

अनुच्छेद 186 का उतना भाग जिनमें का संबंध विधान सभा के उपाध्यक्ष के सदनों और भूतों से है; अनुच्छेद 188, 189, 193, 194, 195 तथा 196; अनुच्छेद 198, अनुच्छेद 199 का खड़ (3) और खंड (4); अनुच्छेद 200 और 201;

अनुच्छेद 202 के खड़ (3) का उतना भाग जिनमें का संबंध विधान सभा के उपाध्यक्ष के सदनों और भूतों से है; अनुच्छेद 203 से 211 तक (जिसमें यह दोनों सम्मिलित हैं), अनुच्छेद 213 के खड़ (1) का परन्तुक और खंड (3) का परन्तुक, और

अनुच्छेद 323 के खड़ (2) का उतना भाग जिनमें का संबंध ज्ञान सहित रिपोर्ट को राज्य के विधान मंडल के समझ रखे जाने से है;

(iii) उक्त राज्य की विधान सभा एवं इतना विवरित की जाती है;

(iv) संविधान में राज्यगाल के प्रति किसी निदेश का अर्थ उत्तराय के संबंध में राष्ट्रपति के प्रति निदेश लगाया जाएगा और उसमें राज्य के विधान मंडल या विधान सभा के प्रति किसी निदेश का जहाँ तक उसका संबंध उसके कृत्यों और उसकी शक्तियों से है, अर्थे जब तक कि सन्दर्भ में अन्यथा अनेकान न हो, समझ के प्रति निदेश लगाया जाएगा, और विशिष्टतया अनुच्छेद 213 में राज्यगाल और राज्य विधान मंडल या विधान सभा के प्रति निदेश का अर्थ क्रमशः राष्ट्रपति और संसद या उसके सदसी के प्रति निदेश लगाया जाएगा।

परन्तु इसमें की कोई बात अनुच्छेद 153, अनुच्छेद 155 से लेकर अनुच्छेद 159 तक (जिसमें ये दोनों भी सम्मिलित हैं) अनुच्छेद 299 और अनुच्छेद 361 तथा

दिवतीय अनुसूची के पैरा 1 से लेकर पैरा 4 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं) के उपबन्धों पर प्रभाव नहीं डालेंगे और न राष्ट्रपति को इस खण्ड के उपखण्ड (1) के अधीन उस सीमा तक जहाँ तक वह ठीक समझे, उक्त राज्य के राज्यपाल के माध्यम से कार्य करने से निवारित करेगी;

(V) संविधान में राज्य के विधान मंडल के या एतद्वारा बनाए गए अधिनियमों या विधियों के प्रति किसी निर्वेश का ऐसे अर्थ लगाया जाएगा मानों उसके अन्तर्गत इस उद्घोषणा के आधार पर संसद द्वारा या राष्ट्रपति या संविधान के अनुच्छेद 357 के खण्ड (1) के उपखण्ड (क) में निर्विष्ट अन्य प्राधिकारी द्वारा राज्य के विधान मंडल की शक्तियों का प्रयोग करते हुए बनाए गए अधिनियमों या विधियों के प्रति निरेश है, और पंजाब साधारण खण्ड अधिनियम, 1898 (पंजाब 1898 का अधिनियम 1), जिस रूप में पंजाब राज्य में लागू है और साधारण खण्ड अधिनियम, 1897 (1897 के 10वें) का उतना भाग जितना राज्य विधियों पर लागू है, ऐसे किसी अधिनियम या विधि के बारे में ऐसे प्रभावी होगा मानो वह उस राज्य के विधान मंडल का अधिनियम हो।

नई दिल्ली,
30 अप्रैल, 1977

बसपा दानपा जस्ती,
राष्ट्रपति के रूप में कार्य करते हुए उप-राष्ट्रपति।

। नई दिल्ली,
30 अप्रैल, 1977

टी० सी० ए० श्रीनिवासबरवन, सचिव।

आदेश

नई दिल्ली, 30 अप्रैल, 1977

सा०का०नि० 210 (अ).—राष्ट्रपति द्वारा जारी किया गया निम्नलिखित आदेश सर्व-साधारण के सूचनार्थ प्रकाशित किया जा रहा है :

भारत के संविधान के अनुच्छेद 356 के अधीन मेरे द्वारा आज 1977 को अप्रैल के तीसवें दिन जारी की गई उद्घोषणा के खण्ड (ग) के उपखण्ड (1) का अनुसरण करते हुए मैं एतद्वारा निरेश देता हूँ कि पंजाब राज्य सरकार के सभी कृत्य और संविधान के अधीन या उस राज्य में

प्रवृत्त किसी विधि के अधीन उस राज्य के राज्यपाल में निहित या प्रयोक्तव्य सभी शक्तियाँ, जिनको राष्ट्रपति उक्त उद्घोषणा के खण्ड (क) के आधार पर अपने हाथ में ले लिया है, राष्ट्रपति के अधीक्षण, निदेशन और नियन्त्रण के अध्याधीन रहते हुए, उक्त राज्य के राज्यपाल द्वारा भी प्रयोक्तव्य होगी।

नई दिल्ली;
30 अप्रैल, 1977

बसपा दानपा जर्ती,
राष्ट्रपति के रूप में कार्य करते हुए उप-राष्ट्रपति।

[सं V/11013/3/77-एस.पड़पी. (डी०-V)]

नई दिल्ली,
30 अप्रैल, 1977

टी० सी० ए० श्रीनिवासवरदन, सचिव।

महा प्रकाशन, भारत सरकार मुद्रणालय, मिंटो रोड, नई दिल्ली द्वारा
मुद्रित रूप संपादक, प्रकाशन विभाग, दिल्ली द्वारा प्रकाशित 1977

PRINTED BY THE GENERAL MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, MINTO ROAD,
NEW DELHI AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1977

